TRAI'S ROLE IN BROADCASTING SECTOR UNDER SCRUTINY

Many questions have been raised over the role of TRAI and most of the stakeholders feel that the time has come for TRAI to reinvent its role and just play the role of a facilitator/ enabler to help spur growth in the broadcast industry. Many broadcasters have very vocally spoken out and urged TRAI to end its jurisdiction over TV channels with regards to pricing, bundling and other issues.

Industry pundits opine that TRAI has been too eager to interfere and has caused instability in the industry. Evidence of this was how the NTO 2.0 was brought in even as the Industry was grappling with NTO 1.0.

All agree that it is important to have a Government body overseeing an industry but difficult to fathom why the TV industry comes under TRAI. If it's primarily due to the reason that TV channels need a licence to uplink, then this needs to be relooked.

TRAI today regulates how broadcasters must price, bundle and present their channels and experts feel that this is like a governmental body deciding how should a fashion brand price its collection, but there is another side to the story as well. TRAI here is trying to protect the interests of the consumer in this. Otherwise, prices of channels will touch record proportions.

With advertising under pressure due to Covid-19, the broadcasting sector is trying to come to terms with the current scenario.

The economic conditions were not too positive and

जांच के दायरे में प्रसारण क्षेत्र में ट्राई की भूमिका

ट्राई की भूमिका पर कई सवाल उठाये गये हैं और अधिकांश हितधारकों को लगता है कि ट्राई के लिए अपनी भूमिका को मजबूत करने का समय आ गया है और प्रसारण उद्योग में तेजी लाने में मदद करने के लिए एक सूत्रधार/प्रर्वतक की भूमिका निभाये। कई प्रसारकों ने बहुत मुखर रूप से बात की और ट्राई से आग्रह किया कि मूल्य निर्धारण, बंडलिंग और अन्य मुद्दों के संबंध में टीवी चैनलों पर अपने अधिकार क्षेत्र को समाप्त करे।

उद्योग पंडितों का कहना है कि ट्राई हस्तक्षेप करने के लिए बहुत उत्सुक रहता है और इसने उद्योग में अस्थिरता पैदा की है। इसका प्रमाण यह था कि कैसे एनटीओ **2.0** लाया गया था, जबकि उद्योग अभी भी एनटीओ **1.0** से जूझ रहा था।

सभी इस बात से सहमत हैं कि एक उद्योग निकाय की देखरेख के लिए सरकारी निकाय का होना बहुत जरूरी है, लेकिन मुश्किल यह है कि टीवी उद्योग ट्राई के अंतर्गत क्यों आता है। यदि यह मुख्य रूप से इस कारण से है कि टीवी चैनलों को अपलिंक की आवश्यकता होती है, तो इसे फिर से देखने की आवश्यकता है।

ट्राई आज बताता है कि प्रसारको को अपने चैनलों की कीमत, बंडल और कैसे प्रस्तुत करना चाहिए और विशेषज्ञों को लगता है कि यह एक सरकारी निकाय की तरह है जो यह तय करता है कि फैशन ब्रांड को अपने संग्रह की कीमत कैसे तय करनी चाहिए, लेकिन कहानी का एक और पक्ष भी है। ट्राई यहां उपभोक्ताओं के हितों की रक्षा करने की कोशिश कर रहा है। वरना् चैनलों की कीमतें रिकॉर्ड अनुपात को छुयेंगी।

कोविद **19** के कारण दबाव में विज्ञापन उद्योग, प्रसारण क्षेत्र वर्त मान परिदृश्य के साथ आने की कोशिश कर रहा है।

आर्थिक स्थितियां बहुत सकारात्मक नहीं थी और महामारी ने इसे

the pandemic made it worse. Its difficult to get investments and regulations and interventions by government agencies only creates new barriers.

Broadcasters feel that TRAI's policies are scraping at their bottom-lines, in the midst of the OTT onslaught. Broadcasters need a regulatory body that works for their survival and not one that creates obstacles for them. Star has taken an aggressive position that TRAI should not interfere with free-market operations of television channels, especially in the area of pricing,

Fresh investments will always be a challenge if the regulatory environment is not stable feel Industry pundits and that TRAI may be trying to implement 'consumer-friendly' measures, but these are in fact, harming the industry and hence the consumer in the long run.

The industry feels that if TRAI's jurisdiction over broadcasters ends then it will simply flourish and let the markets decide which broadcaster thrives and survives. That is easier said than done. Let's keep a watch on how the situation unfolds! ■

TRAI
सत्यमेव जयते
Telecom Regulatory Authority of India
(IS/ISO 9001-2008 Certified Organisation)

और बदतर बना दिया। निवेश प्राप्त करना मुश्किल हो राहा है और सरकारी एजेंसियों द्वारा नियम और हस्तक्षेप केवल नये अवरोध पैदा कर रहा है।

प्रसारकों को लगता है कि ओटीटी हमले के बीच ट्राई की नीतियां उनके लिए मुश्किल पैदा कर रही हैं। प्रसारकों को एक नियामक संस्था की आवश्यकता होती है जो उनके अस्तित्व के लिए काम करती है, न कि उनके लिए बाधायें खड़ी करती है। स्टार ने आक्रामक रूख अपनाया है कि ट्राई को टेलीविजन चैनलों के मुफ्त बाजार संचालन के साथ हस्तक्षेप नहीं करना चाहिए, खासकर कीमतों के क्षेत्र में। उद्योग पंडितों का मानना है कि यदि नियामक वातावरण स्थिर नहीं होगा तो नया निवेश हमेशा चुनौतीपूर्ण होगा। हो सकता है कि ट्राई उपभोक्ता अनुकूल उपायों को लागू करने की कोशिश कर रहा है, लेकिन ये वास्तव में लंबे समय में उपभोक्ता के साथ-साथ उद्योग को भी नुकसान पहुंचा रहा है।

उद्योग को लगता है कि अगर प्रसारकों पर ट्राई का अधिकार क्षेत्र समाप्त हो जाता है तो यह बस फलता-फूलता रहेगा और बाजार को यह तय करने दें कि कौनसा प्रसारक पनपता है और बच जाता है। ऐसा कहना करने से अधिक आसान है। स्थिति कैसे सामने आती है, इस पर नजर रखना होगा। ■

INDIA'S MOST RESPECTED TRADE MAGAZINE FOR THE CABLE TV, BROADBAND, IPTV & SATELLITE INDUSTRY

SATELLITE & Cable Tv

... You Know What You Are Doing But Nobody Else Does

ADVERTISE NOW !

- In-depth & Unbiased Market Information
- Technology Breakthroughs
- Comprehensive Circulation Across The Satellite & Cable TV Industry

Contact: Mob.: +91-7021850198 Email: scat.sales@nm-india.com